ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 8.35, January-June 2026, Published on 28th February 2026

भारतीय राष्ट्रवाद: वीर सावरकर एक दृष्टि

सोनू, शोधार्थी, इतिहास, नीलम विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय राष्ट्रवाद पर विशेष रूप से विनायक दामोदर वीर सावरकर की दृष्टि में प्रस्तुत विचार तथ्य के अध्ययन के संदर्भ में लिखा गया है। भारत में अनेक ऐसे क्रांतिकारी हुए हैं जिन्होंने भारत माता को ब्रिटिश सरकार की बेड़ियों से स्वतंत्र कराने के लिए अपना घर परिवार त्याग दिया और जेल की यातनाएं सहन की लेकिन भारत के इतिहास में ऐसा केवल एक ही क्रांतिकारी हुआ है जिसे कालापानी की सेलुलर जेल की 25-25 वर्ष की दो आजीवन कैद की सजा हुई हो। जिसने सबसे पहले ब्रिटिश साम्राज्य के केंद्र लंदन में उसके विरुद्ध क्रांतिकारी आंदोलन संकलित किया हो, जो स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ-साथ एक चिंतक, समाज सुधारक, इतिहासकार, विपुल साहित्यिक लेखक, संवेदनशील कवि तथा दूरदर्शी नेता जिसने भारतीय राष्ट्रवाद की राजनीतिक विचारधारा को विकसित किया

प्रस्तावना

वीर सावरकर ने ऐसे भारत का सपना सजाया जो अखंड हो और राष्ट्रीय एकता उसकी आत्मा हो विनायक दामोदर सावरकर ने भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा को हिंदुत्व के माध्यम से प्रस्तुत किया, जिसे उन्होंने एक राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान के रूप में परिभाषित किया। उनके अनुसार यह राष्ट्रवाद भौगोलिक क्षेत्र से नहीं बल्कि संस्कृत सामान्य और परंपराओं से बंधे राजनीतिक समुदाय पर आधारित था। उन्होंने हिंदू राष्ट्रवाद को राष्ट्र की राजनीति और सांस्कृतिक एकता का आधार माना और इसके लिए हिंदू समाज में एकता और मजबूती पर जोर दिया। सावरकर का मानना था कि राष्ट्र एक राजनीतिक समुदाय है जो सांझा संस्कृति, परंपराओं और इतिहास से जुड़ा है ना की केवल भौगोलिक क्षेत्र। उन्होंने हिंदुत्व को एक धर्म के बजाय एक जीवन दर्शन और राष्ट्र की पहचान के रूप में प्रस्तुत किया, जहां राष्ट्रहित को सर्वोपरि माना गया सावरकर ने राष्ट्र को संस्कृत और सामाजिक रूप से जागरूक करने पर बल दिया। उन्होंने हिंदू राष्ट्र का सपना सजाया था सावरकर की पुस्तक हिंदुत्व वर्ष 1923 में प्रकाशित हुई। यह हिंदू राजनीतिक विचारधारा की सबसे श्रेष्ठ पुस्तक मानी जाती है।

सावरकर का भारतीय राष्ट्रवाद

संसार में चार प्रकार के लोग होते हैं। पहले प्रकार के वे लोग हैं, जो अपने जीवन काल में कभी नायक नहीं रहे और उनके इस दुनिया से जाने के बाद भी कोई उन्हें याद नहीं करता। दूसरे प्रकार के वे लोग हैं, जो अपने जीवन काल में नायक की तरह रहे और उनके इस दुनिया से जाने के बाद भी उन्हें याद करते हैं। तीसरे प्रकार के वे लोग होते हैं जो अपने जीवन काल में शाश्वत नायकों की तरह नजर आते तथा इस दुनिया से चले जाने के बाद वे धीरे-धीरे भुला दिए जाते हैं। चौथी प्रकार के वे लोग हैं, जो अपने जीवन काल में अस्वीकार्य प्रतीत होते हैं लेकिन इस दुनिया से जाने के बाद वह धीरे-धीरे या कुछ वर्षों के बाद नायक के रूप में उभरते हैं और विश्व के सम्मुख उनका वास्तविक चरित्र एवं योगदान सामने आता है। चौथी श्रेणी में जो लोग आते हैं उन्हीं में से एक नाम है वीर सावरकर।

वीर सावरकर एक कट्टर राष्ट्रवादी चित पवन ब्राह्मण थे। वे वर्ण व्यवस्था और रूढ़ियों में जकड़ी हिंदू मानसिकता का विरोध करते थे। समूची स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वे हिंदू समुदाय के लिए सबसे ऊंची आवाज थे। उनकी विचारधारा आमतौर पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विचारधारा के विपरीत रही है उनके विपुल बौदिक लेखन ने दशकों को तक भारत में क्रांतिकारी धारा को प्रेरित किया। वीर सावरकर

भारत के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सन 1857 के स्वतंत्रता संग्राम को भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम बताते हुए सन 1907 में लगभग 1000 प्रष्टो का इतिहास लिखा।वे भारत के पहले दुनिया के एकमात्र लेखक थे जिनकी पुस्तक को प्रकाशित होने से पहले ही ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया था।

वे दुनिया के पहले राजनीतिक कैदी थे जिनका मामला हेग स्थित अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में चला था। वीर सावरकर ने ही पहले भारतीय झंडा बनाया था जिसे मैडम भीकाजी कामा ने सन 1960 में जर्मनी में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सोशलिस्ट कांग्रेस के अधिवेशन में फहराया था वह पहले ऐसे दूरदर्शी राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने सन् 1962 में चीन द्वारा भारत पर आक्रमण करने के लगभग 10 वर्ष पहले ही कह दिया था कि भविष्य में चीन भारत पर आक्रमण करेगा।

वीर सावरकर की राष्ट्र के प्रति दृष्टि अत्यंत ही स्पष्ट थी वह जब स्नातक परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। उन्होंने सन 1905 में विदेशी वस्त्रो का बहिष्कार करने का निर्णय लिया। कुछ नेताओं ने वीर सावरकर के इस निर्णय का स्वागत नहीं किया और कहा कि विदेशी वस्त्रो को जलने से अच्छा है इन्हें गरीबों में बांट दिया जाए। लेकिन वीर सावरकर का मानना था कि विदेशी वेस्टन की होली जलाने के बाद ही स्वदेशी वस्तुओं के महत्व को स्थापित किया जा सकता है। अंततः 22 अगस्त 1906 को उन्होंने बाल गंगाधर तिलक की अध्यक्षता में पुणे में पहली बार सार्वजनिक रूप से विदेशी वस्त्रो की होली जलाई।

सावरकर का हिंदू राष्ट्रवाद

ऐसा नहीं है कि हिंदू शब्द का प्रयोग वीर सावरकर ने किया। उनसे पूर्व कई बार इस शब्द का प्रयोग किया जा चुका है। लेकिन वीर सावरकर ने हिंदू शब्द का विस्तार किया। सर्व विदित है कि विश्व की समस्त सभ्यताएं नदियों के किनारे फली फूली है ठीक उसी प्रकार जम्बू दीप की सनातनी सभ्यता सिंधु नदी के किनारे सिंधु घाटी की सभ्यता है, वीर सावरकर के अनुसार सिंधु घाटी सभ्यता में जितना भी समाज पल्लवित-पुष्पित हुआ है, वे सभी हिंदू हैं। आज पूजा पद्धति से हिंदू को जोड़ा जाता है और उसे समय भी जोड़ा जाता था। समाज को जोड़ने के लिए वीर सावरकर ने हिंदू शब्द के अर्थ का विस्तार किया।

जम्बू दीप में जितने भी लोगों ने अनाधिकृत प्रवेश किया, उनकी प्रथम चेष्टा हिंदू तबके को नष्ट करने की तथा सनातनी संस्कृति में भेद विभेद उत्पन्न करने की रही। प्रकृति को अपना रक्षक एवं पोशाक मानने वाले समाज को उन्होंने अर्थतंत्र की अनिश्चित निद्रा में सम्मोहित कर दिया। इसी की प्रतिक्रिया के रूप में सावरकर ने हिंदुत्व शब्द को परिभाषित किया।

वीर सावरकर कहते हैं हिंदुत्व एक उदार जीवन पद्धति है। यहां एक ही सत्य है उसे मानने वाले विविध पन्थ से वहां पहुंचते हैं। हिंदुत्व एक संस्कृति व संस्कार है तथा धर्म का अर्थ कर्तव्य है धर्म शब्द की गलत व्याख्या करके हमारी सनातनी संस्कृति को नष्ट किया जा रहा है। जब वीर सावरकर यह कहते हैं कि हिंदुत्व एक संस्कृति वह संस्कार है तब वह अखंड भारतवर्ष के रूप में हिंदू राष्ट्र को देखते हैं। वे कहते हैं कि एक संस्कृति से जुड़े हुए लोग एक क्षेत्र विशेष के अंतर्गत आते हैं, तो उन्हें इस आंचल का निवासी बता दिया जाता है। तो फिर सिंधु घाटी की सभ्यता तथा संस्कृति से जुड़े हुए निवासी को हिंदू तथा उसके राष्ट्र को अखंड भारतवर्ष तथा हिंदू राष्ट्र क्यों नहीं कहा जाता

वीर सावरकर एक क्रांतिकारी के रूप में

क्रांतिकारी वीर सावरकर का जन्म 28 में 1883 को महाराष्ट्र के भागुर में चित पवन ब्राह्मण परिवार

में हुआ था उनके माता-पिता धार्मिक विचारों के थे। सावरकर को बचपन से रामायण महाभारत तथा धार्मिक ग्रंथो का अध्ययन करने की काफी रुचि थी। सावरकर ने 1900 ईस्वी में मित्र मेला एक संगठन बनाया जो आगे चलकर 1904 में अभिनव भारत के रूप में उभर कर सामने आया। वीर सावरकर भारत के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम को भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम सिद्ध किया इसके बाद ब्रिटिश सरकार द्वारा इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। सावरकर को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई । जेल में सावरकर को कठिन यातनाएं सहन करनी पड़ी 1937 को सावरकर को रिहा कर दिया गया सावरकर ने आजादी हेतु संघर्ष जारी रखा। 26 फरवरी 1966 को भारत के इस महान सपूत, पीर क्रांतिकारी देशभक्त का स्वर्गवास हो गया

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के माध्यम से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वीर सावरकर का जीवन भारतीय राष्ट्रवादी और आजादी के नायक के रूप में रहा है। सावरकर के विचार वर्तमान में भी प्रासांगिकत है वीर सावरकर हिंदू समाज में प्रचलित जाति भेद एवं छुआछूत के घोर विरोधी थे। फरवरी 1931 में मुंबई में उन्हीं के प्रयासों से बना पतित पावन मंदिर जो हिंदू धर्म की प्रत्येक जाति के लोगों के लिए समान रूप से खुला है वीर सावरकर व्यक्ति पूजा के विरोधी थे। विवेकपूर्ण और तार्किक बयान उनके व्यक्तित्व की पहचान थी वह ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रांति वीर तो थे ही, हिंदू राजनीतिक और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विचारक और प्रेरणा स्रोत भी थे ।

वीर सावरकर ने सनातनी परंपरा को पुणे प्रतिष्ठित किया पश्चिमी दृष्टिकोण को खारिज करते हुए उन्होंने यह स्पष्ट किया कि किसी भी व्यक्ति के निर्माण में माता-पिता दोनों का योगदान रहता है वीर सावरकर का यह दृष्टिकोण एक व्यक्ति को अपनी जड़ों से जोड़ता है

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. 1857 की क्रांति का स्वतंत्रता समर पृष्ठ संख्या 8
2. द हिस्ट्री ऑफ़ फ्रीडम मूवमेंट ताराचंद
3. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष डॉक्टर विपिन चंद्र संजीव प्रकाशन मेरठ
4. वीर सावरकर नेशनल मूवमेंट सुनील कुमार पांडे पृष्ठ संख्या 372
5. भारत का राष्ट्रीय आंदोलन पुखराज जैन साहित्य भवन आगरा
6. सावरकर विचार दर्शन पृष्ठ संख्या 8
7. युगपुरुष सावरकर, अशोक कौशिक
8. सावरकर एक भूले बिसरे अतीत की गूंज, विक्रम संवत पृष्ठ संख्या 8
9. भारत में राष्ट्रवाद वीके सिंह पृष्ठ संख्या 239
10. सावरकर विचारों की प्रासंगिकता अशोक मोडक